गुरु गोबिन्द सिंह कृत 'कृष्णावतार' में अभिव्यक्त राधा कृष्ण का प्रेम

डॉ. नीतू कौशल
अस्टैंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला–147002
E-mail: neetukaushal29@yahoo.in

मानव हृदय में नैसर्गिक रूप से समाहित विविध भावों में से प्रेम भाव को सर्वोच्च माना जाता है। प्रेम के बिना मानव जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। प्रेम का प्रभाव मानव जीवन पर पड़ना स्वाभाविक है। रमाशंकर तिवारी के अनुसार, ''प्रेम धागों का एक बड़ा बण्डल है जो मानव आचरण के प्रत्येक पक्ष से उलझे हुए हैं। उद्यान को खोदने जैसे साधारण व्यापार से लेकर चित्र रंग के रंगने, किसी नगर को लूटने तथा साम्राज्य की स्थापना करने जैसे प्रत्येक कार्य में इन धागों में से एक–न–एक का सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है।''[1] अर्थात् प्रेम स्वयं के भीतर न जाने कितने ही गहन भावों को समेटे हुए है। प्रेम जुड़ाव का नाम है। यह मानव जीवन की सबसे बड़ी शक्ति है। जिस तरह धागे आगे से आगे एक दूसरे के साथ जुड़कर एक सुन्दर कलाकृति का रूप धारण करते हैं उसी भान्ति प्रेम भी मानव जीवन में स्वच्छ रिश्तों का निर्माण करता है। प्रेम रूपी धागे से मनुष्य के रिश्तों की परिधि इतनी बढ़ जाती है कि वह समष्टि हित के भाव का द्योतक हो जाता है। मानव के विकास का मानदण्ड भी प्रेम ही है।

'प्रेम' मानव जीवन के साथ–साथ अन्य क्षेत्रों को भी पूर्ण रूप से प्रभावित करता है। मानव का साहित्य के साथ अटूट सम्बन्ध है। इसलिए मानव के साथ–साथ प्रेम साहित्य को भी प्रभावित करता है। विश्व का समस्त साहित्य प्रेम के स्पन्दनों से अनुभावित है। ''प्रेम साहित्य का सबसे सशक्त माध्यम रहा है। नमक के बिना षट्रस–व्यंजन व्यर्थ है और प्रेम भावना के बिना साहित्य। साहित्य में से प्रेम का बहिष्कार कर दिया जाए तो जो बचेगा वह कदाचित शून्य के निकट ही होगा।''[2] ज्ञात है कि प्रेम के बिना साहित्य नीरस हो जाएगा।

1. रमाशंकर तिवारी, सुर का श्रृंगार वर्णन, अनुसंधान प्रकाशन, 1966, पृ. 45.
2. रामकुमार खण्डेलवाल, हिन्दी काव्य में प्रेम भावना, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, पृ. 21.

हिन्दी साहित्य में प्रेम की अभिव्यंजना विभिन्न रूपों में हुई है। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक प्रेम साहित्य का विषय बना रहा इसीलिए हिन्दी साहित्य में प्रेमाश्रित काव्य के आधार पर प्रेममार्गी काव्यधारा का प्रणयन हुआ। प्रेम भाव की अभिव्यक्ति के लिए मुख्य रूप से राधा और कृष्ण के प्रेम को ही आधार बनाया गया। हिन्दी साहित्य में राधा कृष्ण के प्रेम को सामान्य नायक नायिका के प्रेम के रूप में चित्रित किया गया परन्तु साथ ही इसकी आध्यात्मिक व्याख्या के साथ इनके प्रेम को आलौकिक धरातल भी प्रदान किया गया, हिन्दी साहित्य में इनके (राधा और कृष्ण) प्रेम के अनेकानेक प्रसंग दिखाई देते है। मध्यकाल में राधा और कृष्ण के प्रेम को व्यापक फलक पर चित्रित किया गया है। ''ईसा की बारहवीं शताब्दी से लेकर पन्द्रहवीं शताब्दी तक के बीच के समय में प्रायः समस्त कृष्णोपासक सम्प्रदायों का विकास एवं प्रसार घटित हुआ। पन्द्रहवीं शताब्दी में मथुरा के तीर्थों का उद्धार कर, वृन्दावन को कृष्ण–भक्ति का केन्द्र बनाने वाले कृष्णोपासकों में चैतन्य एवं वल्लभ का सर्वोपरि महत्व है। निम्बार्क सम्प्रदाय भी कृष्ण–भक्ति का प्रचारक है और पंडितों का कथन है कि ब्रज–मंडल में निम्बार्क–सम्प्रदाय की प्रतिष्ठा इन दोनों की अपेक्षा प्राचीनतर है।''[3] स्पष्ट है कि हिन्दी साहित्य में कृष्ण–काव्य की परम्परा बहुत प्राचीन है और यह भी ज्ञातव्य है कि यह जितनी प्राचीन है, उतनी ही प्रभावशाली भी है। इसीलिए केवल हिन्दी ही नहीं अपितु भारत की प्रत्येक भाषा के साहित्य में कृष्ण–जीवन–चरित उल्लेखित है।

कृष्ण के जीवन का प्रभाव, मध्यकालीन साहित्यकारों पर इतना अधिक प्रखर रहा कि गुरु गोबिन्द सिंह जैसे वीर–रस के कवि का साहित्य भी इस विषय से अछूता ना रह सका। 'कृष्णावतार' इस तथ्य का सशक्त प्रमाण है। राधा और कृष्ण का प्रेम साहित्य में इतना अधिक चर्चित और प्रयुक्त हुआ कि गुरु गोबिन्द सिंह जैसे महान, पराक्रमी एवं वीर योद्धा भी इस प्रभावाधीन एक महान, चर्चित काव्य की रचना किए बिना ना रह सके। ''कृष्णावतार की रचना निःसन्देह बड़े मनोयोग से हुई है। रीतिकालीन साहित्य के उत्तम काव्यों के साथ इसकी अनायास तुलना की जा सकती है, पर जहां मनोहर भाव है वहां कवि की कला बहुत निखरकर प्रकट हुई है। ऐसा जान पड़ता है कि दशम ग्रन्थ का कवि सरस सूक्तियों में अधिक रुचि लेता है।''[4] यह काव्य उन्होंने कृष्ण चरित्र के वीर रूप को आधार बनाकर रचा है। लेकिन स्वयं पर उन्होंने वीर रूप को हावी नहीं होने दिया है। उन्होंने राधाकृष्ण के प्रेम का बहुत ही सुन्दर पक्ष पाठक वर्ग के समक्ष रखा है। वह किसी भी तरह की लाग लपेट में नहीं पड़े। उन्होंने राधा को सीधी–सादी गांव की किशोरी के रूप में दिखाया है जो कृष्ण की मुरली की धुन सुनकर दौड़ी चली आती है।

---

3. रमाशंकर तिवारी, सुर का श्रृंगार वर्णन, अनुसंधान प्रकाशन, 1966, पृ. 105.
4. हजारीप्रसाद द्विवेदी, सिक्ख गुरुओं का पुण्य स्मरण, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 80.

कान्ह बजावत है मुरली सुनि होत सुरी असुरी सभ बउरी।

आइ गई ब्रिखभान सुता सुनि पै तरुनी हरिनी जिमु दऊरी।[5]

मुरली राधा और कृष्ण के प्रेम का प्रतीक है। यह उनकी सहचारिणी है। जैसे ही मुरली की धुन राधा के कानों में पड़ती है, वैसे ही वह समस्त गृह कार्य छोड़कर कृष्ण की ओर दौड़ी चली जाती है।

'कृष्णावतार' के कवि ने राधा के प्रेम के साथ–साथ उसके सौन्दर्य के उद्धहरण प्रस्तुत करके भी संयोग श्रृंगार का मार्मिक चित्रण किया है। कवि ने श्रृंगार की दोनों अवस्थाओं संयोग और वियोग का बहुत ही तल्लीनता के साथ वर्णन किया है। संयोग वर्णन में परस्पर अवलोकन, हास्यप्रद और सुखदायक होता है। प्रेम–प्रेम में राधा गोपियों को साथ लेकर रास क्रीड़ा के लिए श्रीकृष्ण के साथ बहुत बड़ा युद्ध करने को कहती है–

बिषभानु सुता हरि पेख हसी, इिह भांति कहयो संग ग्वारिन कै।।

सम दारिम दांत निकास किधो, सम चन्द्रमुखी ब्रिज बारन कै।।

हम अउ हरि जी अति होउ परी, रस ही के सु बीच महारन के।।

तजि के सभ संक निसंकि भिरो संग ऐसे कहयो हसि ग्वारिन के।।[6]

कवि ने राधा और कृष्ण जोकि नायक एवं नायिका की भूमिका में हैं, के मिलन में सखियों की भागीदारी को भी विशेष रूप से दिखाया है। इनके मिलन में सखियां भी सहायक होती हैं।

रास मंडल रूपी पुष्पवाटिका में राधा और कृष्ण फूल और भंवरे की भान्ति प्रतीत हो रहे हैं। श्रीकृष्ण मानों फूल हैं और धारा भंवरें की भांति उनके साथ लिपट गई है।

''फूल रही लपटाइि मनो त्रीय भउरी।।[7]

इन दोनों का फूल और भंवरे की भांति किया गया प्रेम रोचक, मनोरंजक और आकर्षित बनकर पाठकों के मानस पटल पर आनंद विभोर होता प्रतीत हो रहा है। संयोग पक्ष की भांति ही कवि का वियोग पक्ष भी अति हृदयग्राही बन पड़ा है। श्रीकृष्ण जब राधा के साथ रास–क्रीड़ा करते हैं तो राधा को स्वयं पर गर्व होने लगता है लेकिन प्रेम में गर्व के लिए कोई भी स्थान नहीं है इसीलिए राधा के गर्व का निवारण करने के लिए कृष्ण कुछ समय के लिए अन्तर्ध्यान हो जाते हैं। राधा उनके वियोग में

---

5. भाई रणधीर सिंह (सं.), दशम ग्रन्थ (कृष्णावतार), पंजाबी युनीवर्सिटी पब्लिकेशन ब्यूरो, पटियाला, पृ. 358.
6. दशम ग्रंथ, कृष्णावतार, छंद, सं. 544.
7. वही, छंद संख्या, 583.

अपने उदास मन की विरह अग्नि की भयानक एवं प्रज्जवलित लपटों को बुझाने का प्रयास करती है।

प्रायः देखा जाता है कि रचनाकार अपनी रचना करते समय श्रृंगार के दोनों पक्षों संयोग और वियोग की बात करते समय वियोग पर ही अपनी कृति को छोड़ देते हैं, लेकिन 'कृष्णावतार' के रस सिद्ध कवि गुरु गोबिन्द सिंह ने राधा के मान प्रसंग अर्थात् कृष्ण के अंतर्ध्यान होने पर राधा के विरह अवस्था को भोगने के पश्चात् पुनर्मिलन का मनोहारी एवं रोमांचकारी वर्णन प्रस्तुत किया है।

श्रीकृष्ण और राधा यमुना नदी में जल विहार करते हुए जल–क्रीड़ाओं का आनंद लेते हैं, उन की क्रीड़ाओं को देखकर यमुना का नीर भी रीझ उठता है। फिर दोनों पुनः रास रचाते हैं और सारंग की मधुर तान छेड़ते है, जिसे सुनकर वन की मृगियां भी दौड़ी आती है और गोपियां भी आनंद विभोर हो जाती हैः–

ब्रिज नारिन सो मिल कै ब्रिज नाथ तू सारंग मैं, इिक ताक बसायो।।

सौ सुनि कै म्रिग आवत धावत, ग्वारनीया सुन कै सुखु पार्यो।।[8]

श्रीकृष्ण और राधा का प्रेम सृष्टि के तमाम सुखों से परे है। इनके प्रेम के सुख में तो संपूर्ण वातावरण भी आनन्दमयी हो कर झूमने लगता है। भले ही 'कृष्णावतार' के कवि ने इस कृति की रचना 'वीर काव्य' के रूप में की है। लेकिन वह भी राधाकृष्ण की माधुर्य भक्ति के तीव्र प्रभाव से स्वयं को अछूता नहीं रख सके हैं। राधा श्रीकृष्ण से इतना प्रेम करती है कि वह विरह की असहनीय अग्नि में जल कर कुंदन हो निकलती है। प्रारम्भ में राधा के जिस विरह में हमें आक्रोश दिखाई देता है वहीं विरह 'प्रेम' जैसे अनमोल और उत्कट भाव से शालीनता, आत्मसर्मपण और कोमलता में परिवर्तित हो जाता है।

[8]. दशम ग्रन्थ, कृष्णावतार, छंद सं. 754.